छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य परिवेश और प्रवृत्तियाँ

- डॉ मनोज कुमार सिंह
  हिन्दी विभाग
- मुंशीलाल आर्य कॉलेज, कसबा, पूर्णियाँ, बिहार

छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य परिवेश

सर्वप्रथम बीसवीं सदी के चौथे दशक से छठे दशक तक राष्ट्रीय और वैश्विक हालात से अवगत होना आवश्यक है, ताकि तद्युगीन साहित्यिक आन्दोलनों के कारण और प्रभाव को जाना जा सके। सन् 1930 से भारतीय राष्ट्रवाद अपने निर्णायक दौड़ में पहुँचकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था। सन् 1929 ई में स्वामी सहजानंद का किसान आन्दोलन, 1930 ई तक भारतीय राजनीति में अम्बेदकर का आगमन, सन् 1930–31ई0 में भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव की शहादत और 1933 ई में किसान सभा का गठन एवं 1939 ई में राहुल सॉकृत्यायन का किसान आन्दोलन में लाठी से सर फूटना और जेल जाना आर्दि उत्तर छायावादी परिसिथति का प्रभावशाली कारण है।

लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त तक अमेरिका के वरक्स सोवियत संघ का महाशक्ति के रूप मैं उदय हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरेक वर्ग अपनी आकांक्षा और उद्देश्य को पूरा करने के लिए संयुक्त प्रयास कर रहा था। भारतीय आजादी की लड़ाई में पूंजीपति, मध्यम वर्ग और आमजन सभी मिलकर संघर्ष कर रहे थे। राष्ट्रीय आन्दोलन जन आन्दोलन बनकर सामने आया। ₹पूर्ण स्वराज₹ की मांग की जा रही थी। छायावादोत्तर काव्य में दिनकर और बच्चन राष्ट्रीय.सांस्कृतिक धारा के जनपक्षी तेवर अपनाये हुए थे। सन् 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हो चुकी थी। साहित्य का जनपक्षी रूझान स्पष्ट हो चुका था। गद्य में आदर्शवाद की जगह सामाजिक यथार्थवाद ने अपना स्थान बनाया। प्रगतिशील काव्य रचना जनता के पक्ष में अपनी प्रतिबद्धता जाहिर करने लगी। भारतीय जनमानस भी विश्व-युद्ध की विभीषिका और साम्राज्यवादी दमन का दर्शन कर चुका था। विश्व मानचित्र पर पूंजीवादी उग्रराष्ट्रवाद प्रथम विश्व-युद्ध की कड़ुवाहट लिये द्वितीय विश्व-युद्ध की तैयारी में जुट चुका था।

समाजवादी क्रांति से औपनिवेशिक जगत में एक नयी प्रेरणा और बल मिला जिससे सबसे बड़ा और मजबूत उपनिवेश भारत अपनी आजादी के लिए संघर्ष पथ पर तीव्रता से आगे बढ़ चला।

प्रजातांत्रिक राष्ट्रवाद और अधिनायकवाद के विरूद्ध समाजवाद का जीवन.मरण का युद्ध आरम्भ हो गया। सोवियत संघ की समाजवादी शासन.व्यवस्थाए पूंजीवादी.साम्राज्यवादी.राष्ट्रवादी जनतांत्रिक और अधिनायकवादी शासन व्यवस्था के निशाने पर रही। जर्मनी और जापान की ताकतें समाजवादी शासन व्यवस्था को नस्त नाबुद करने पर तुली थीए तो मित्र.राष्ट्र भी अपनी कटनीतिक चाल से उसे कमजोर करना चाह रहा था। शिवदान सिंह चौहान समाजवादी क्रांति को इतिहास का युगान्तकारी मोड़ मानते हैं। उनका कहना है.श प्रथम विश्वयुद्ध के बाद रूस की समाजवादी क्रांति एक युगान्त का सूचक है तो एक नये युगारम्भ की घोषणा भी।

दो विश्वयुद्ध के व्यापक विनाशलीला के बाद कमजोर होती साम्राज्यवाद शकित और जागरूक राष्ट्रीय शक्ति के कारण एक.एक कर एशियाए अफ्रिका और लातीनी अमेरिका के देश आजाद होने लगे।

दूसरे विश्वयुद्ध में सोवियत जनता ने फासिज्म से विश्व की रक्षा में अभूतपूर्व योगदान दिया। ‘उसकी सहायता और प्रेरणा से दुनिया की एक तिहाई जनता पूंजीवादी व्यवस्था से मुक्ति पाकर समाजवादी जीवन निर्माण के पथ पर अग्रसर हो सकी।’ वे मानते हैं कि समाजवादी क्रांति से साम्राज्यवाद का वह साम्राज्य क्रमशरू ध्वस्त होने लगाए जिसे उन्होंने वर्षों से गुलाम बना रखा था। साम्राज्यवादी शक्तियों ने एशिया, अफ्रिका और लातीनी अमेरिका में जो औपनिवेशिक सत्ता स्थापित कर रखी थी उसमें दरार पड़ने लगा। बीसवीं सदी के चौथे दशक में विश्व मानव एक अन्धायुग से गुजर रहा था, जहाँ संशय, अनिश्चितता, असुरक्षा, असंतोष और भय कुंठा चरमोत्कर्ष पर था।

चौथे दशक से छठे दशक का विश्व वस्तुतः प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध की चपेट में रहा।

- चारों तरफ हिंसा शैतानी अट्टहास कर रही थी और इंसान चतुर्दिक काल का निबाला बनता जा रहा था। मानवीय व्यक्तित्व में विखंडन, अलगाव, विसंगतियाँ बढ़ने लगी। मनुष्य की विनाशक महत्वाकांक्षा ने सर्वत्र अव्यवस्था और अराजकता का माहौल पैदा कर दिया था। विश्व की त्रिकोणात्मक सैन्य शक्तियाँ एक.दूसरे को खत्म करने पर तुली थी। बेशक तीसरी दुनिया के लोग इससे अनभिज्ञ नहीं थे, बल्कि भय और आशंका से स्थिति का जायजा ले रहे थे और अपनी आजादी का बेहतर मौका भी तलाश रहे थे। उपनिवेशवादी गुलाम मानसिकता से मुक्ति की आकांक्षा लिये तीसरी दुनिया के लोगों ने अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व की खोज और प्रतिष्ठा हेतु राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ किया।

email : mpmahananda@gmail. com

डॉ मनोज कुमार सिंह